भोजपुरी लोकगीत में करुण-रस
हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग-1944

करुण रस

जँतसार

१

जँतसार गीत जाँत पीसते समय गाया जाता है। दिन रात की गृह-चर्य्या से फुरसत पाकर जब बीती रात या देव बेला [ब्रह्म मूहूर्त] में स्त्रियाँ जाँत पर आटा पीसने बैठती हैं तब वे अपनी मनोव्यथा मानो गाकर ही भुलाना चाहती हैं। इसी से जँतसार में स्त्री जीवन की सारी वेदनायें, सारी यातनायें जो गृहस्थी में उन्हें भोगनी पड़ती हैं वर्णित हैं। मैथिली शरण जी ने भी कहा है:—

गीत गाने बैठतीं या दुख भुलाने बैठतीं।
बोअलीं मों गोहुवाँ ऊपजि गइली अँकरी,
मेड़वा बइठल प्रभु झंखेले की।
जनि प्रभु झंखहु जनि प्रभु झुरवहु, अँकरी बदलि गोहुवाँ पीसबि रे की ॥१॥
पिसत कुटत मोरा धनि दुबरइली, कहतू त चेरिया लेअइतों रे की ॥२॥
चेरिया त आने गइले सवति ले अइले, सवति बिरहिया कइसे सहबि रे की ॥३॥
पुरिया पकइह ए गोतिनी जउरी जे रिन्हिह, परत परत महुरा लगइहहु रे की ॥४॥
एक छिपा खइली सवत दुइ छिपा खइली, अँचवे के बेरिया कपरा घुमरल रे की ॥५॥
जऊँ तोरा बहुआ रे घुमरेला कपरा, सुति रहु प्रभु धवरहर रे की ॥६॥
हर जोति अइलें कुदारी झामि अइले ओरि तर बइठे मनवा मारि रे की ॥७॥
सभ केहुके देखे लों अँगना से घरवा में, पुरुबी बंगालिन नाहीं लऊके ले रे की ॥८॥
तोहरी बहुअवा बबुआ गरभी गुमनिया, सुतल बाड़ी धवरहर रे की ॥९॥
एक पैना मरले दुसर पैना मरले, पुरुबी बंगालिनि नाहीं बोले ली रे की ॥१०॥

मैंने गेहूँ बोआ था परन्तु तमाम अँकरी (अन्न विशेष जिसकी घास की श्रेणी में गणना है) उपज आयी। इस दुःख के मारे मेंड़ पर बैठे हुए मेरे स्वामी चिन्ता कर रहे हैं ॥१॥

स्त्री ने ढाढ़स बँधाते हुए कहा—"हे स्वामी! चिन्ता न करो। मैं अँकरी को बदल कर ही गेहूँ की रोटी बनाऊंगी और तुम्हें खिलाऊँगी" ॥२॥

पति ने कहा—"हाय कूटते पीसते मेरी स्त्री दुबली हो गयी। हे प्यारी! कहो तो मैं तुम्हारे लिये एक चेरी लाऊं" ॥२॥

स्त्री ने कहा—"मेरे स्वामी मेरे लिये दासी लाने के लिये तो गये पर ले आये सवत। हा! अब मैं सौत द्वारा दिये गये इस विरह को कैसे सहन करूंगी" ॥३॥

उसकी गोतिनी ने समझा कर सलाह दी—"हे गोतिनी! तुम जाउर, (खीर) और पूरी पकाना और उसके हर तह में विष लगा देना"। स्त्री ने ऐसा ही किया उसकी सौत ने एक थाल खाया, फिर दूसरा भी खा डाला। उठकर हाथ धोने के समय उसका सर घूमने लगा ॥४॥

स्त्री ने कहा—"री बहू! यदि तुम्हारा सर दर्द कर रहा है तो स्वामी के धौरहरे पर जाकर सो रहो दर्द अच्छा हो जायगा" ॥६॥

स्वामी हल जोत कर और कुदाल चला कर जब खेत से घर लौटकर आया तो ओरी के नीचे मन मार करके बैठ रहा ॥७॥

उसने कहा—"सब किसी को तो आँगन और घर में देखता हूँ परन्तु वह पूर्व देश की बंगालिन नहीं नजर आती" ॥२॥

जेठानी ने उत्तर दिया—"हे! बाबू तुम्हारी नई बहू गर्व और गुमान में माती हुई है। वह धौरहरे पर सो रही है" ॥६॥

क्रोध में आकर वह धौरहरे पर चढ़ गया और पूर्व देश की बंगालिन को एक पैना (बैल हाँकने का डेढ़ हाथ लम्बा बाँस का पतला डंडा) मारा। तब भी जब वह नहीं उठी तो दूसरा पैना मारा। परन्तु बंगालिन मर चुकी थी बोले तो कौन बोले ॥१०॥

बेटी मैंने उसे ऊँची जगह पर तो मारा और नीचे गिरा कर चन्दन वृक्ष से लगा दिया ॥१८॥

कन्या ने छाती पर पत्थर रख कर अपनी सहज स्त्री चातुरी से काम लिया और कहा—हे पिता जी ! मैं आपको छोड़कर दूसरे किसी की नहीं हो सकती पर ईश्वर के नाम पर मुझे स्वामी की लाश तो दिखा दो ॥२०॥

घुरमल सिंह ने कहा—हे मेरे पिछवारे रहने वाले मेरे हितैषी भाई कहार ! भगवति के लिये पालकी सजाकर ले आओ ॥२१॥

भगवती एक कोस गई, दूसरा कोस उसने पार किया। तीसरे कोस में उसने देखा कि चील मेड़रा रही हैं ॥२२॥

उसने अपने पिता से यह कह कर कि वह उसी की होकर रहेगी आग ले आने का आग्रह किया ॥२३॥

पापी पिता आग लाने के लिये गया। इधर भगवती ने शव को लेकर कहा—हे राम ! यदि ये मेरी कुमारी अवस्था के विवाहित सत्य के स्वामी हों तो—हे भगवान !! मेरी फुफुती (साड़ी का अग्रभाग) से अग्नि धधक उठे ॥२४॥

जब तक घुरमल सिंह आग लेकर लौटा तब तक इधर भगवति की फुफुती से आग प्रगट हो कर धधकने लगी ॥२५॥

उस अग्नि में यह दम्पति जल कर स्वाहा हो गया। घुरमल सिंह मुँह पर रुमाल रखकर रोने लगा और कहने लगा—मेरी बुद्धि का हरण मेरी लड़की भगवती ने किया ॥२७॥

इसी भावका एक गीत हम और जँतसार नं० ३ में उधृत कर चुके हैं। किन्तु उसमें जेठ और भवह की गाथा है। और नायिका है टिकुली। इस गीत में नायिका भगवति है और नायक उसका पिता घुरमलसिंह और पति इन्द्र सिंह। वर्णन प्रायः एक सा है। कुछ चरण तो वैसे ही हैं। सती के सत का अच्छा परिचय है और दूसरों के लिये आदर्श पथ प्रदर्शन भी। नराधम पिता के कुकृत्यों का गीत में सत्य रूप में रख छोड़ना यथार्थ चित्रण का ज्वलन्त उदाहरण है और इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण है कि सती

कवयित्री ने भी सदा पुरुषों से होशियार रहने के लिये अपनी बहनों को उपदेश दिया है। यहाँ तक कि ऐसे नराधम पिता का भी अस्तित्व बता कर उससे सावधान रहने की शिक्षा दी है और पुरुष मात्र से स्त्री को होशियार रहने को कहा है।

(८)

गवना करवलीं ए पीअवा, घर बइठवलीं नू रे की ॥१॥
ए मोरंग जीवरे अपने चलेले उतरी बनीजिया नू रे की ॥
बरहो बरिस पर अइले ए मोरंग जीवहो ढारे जिरवा गोनिया नू रे की ॥
माई लेई धावे हो रामा आरे पिढ़वा से पनिया नू रे की ॥
ए मोरंग जीव हो बहिनी ले अइली नव रंग बेनिया नू रे की ॥२॥
सभ कें त देखीं ए आमा अंगना से घरवा हो रामा ॥
ए मोरंग जीव हो पतरी तिरीअवा नाही देखीं ले हों की ॥३॥
तोहरी तिरिअवा ए बबुआ ! गरभी गुमनिया हो राम ॥
ए मोरंग जीव हो—सूतल बाड़ी घर धवरहर हो की ॥४॥
जब आमा ! रहिती हो जांघ के तिरिअवा नू रे की ॥
ए मोरंग जीव हो झांकि झुकी देखिती आपन पिअवा नू रे की ॥५॥
तोहरो तिरिअवा ए बाबू ! गरभी गुमनिया नू रे की ॥
ए मोरंग जीव हो डूबि मरली ओहीरे सगरवा नू रे की ।
कहां गइलू सत क तिरिअवा बिहरे मोर छतिया नु रे की ॥६॥

पति ने स्त्री का गौना कराया। उसे घर में बैठा कर वह मोरंग देश व्यवसाय करने चला। बारह वर्ष के बाद व्यवसाय करके उधर से जब वह लौटा तब बैल की बरधी खोलकर उसे गिराया। माता बैठने के लिए पीढ़ा (उठ का आसन) और पीने के लिए पानी लेकर दौड़ आई और बहिन रंगीन पंखा लेकर उसके पास गई ॥१-२॥

मोरंग से लौटे पुरुष ने कहा—हे मा ! मैं सब किसी को घर और आँगन में देख रहा हूँ। लेकिन मेरी सुकुमार पत्नी कहाँ है ? ॥३॥

माता ने कहा—हे पुत्र ! तुम्हारी स्त्री बड़ी गर्वीली है। वह धौरहर पर

कटलो मों चनन चइलिया चितवा जोर धनि के सरिरिया जरि
भइली अँजोर ॥६॥

दुखी पति कह रहा है, "हा, मैंने उसको, धनि को, नैहर से विदा कराया। रास्ते में शाम हो गई तब उस मधुबन में मैंने बसेर लेना निश्चय किया। मैंने कास और कुश काट कर बिछावन बिछाया और उसी सेज पर धनि के साथ सो रहा। कुछ देर बाद धनि चिल्ला कर कहने लगी—हे पति! उठो थोड़ा उजाला करो। मेरी उँगली के पोर में मालूम क्या काट गया।" ॥१,२,३॥

इस पर मैंने कहा,' 'अरे एक तो तुम ऐसी ही अल्पवयस्का हो, उस से सुकुमार भी कम न हो। कहीं चींटी के काटने से गोहार (शोर) मचा दिया।" ॥४,५॥

हा! मैं सो गया। जब मेरी नींद खुली तो धनि सदा के लिये सो चुकी थी। मैंने काँस और कुश काट कर जलाया तब जो धनि की सूरत देखी वह अब भूलने की नहीं। मैंने चन्दन काटा। उसको चीर (फाड़) कर चिता बनाई और धनि को उस पर जलाया। उसका शरीर जलकर प्रकाश में मिल गया ॥६॥

(४६)

महँवे बाट एक साँकरि कुइयाँ दइया, पनियाँ भरत एक सुन्दरि रे की ॥१॥
घोड़वा चढ़ल एक अइलें सिपहिया, बूँद एक पनिया पिअावहु रे की ॥२॥
कइसे मैं पनिया पिआवों रे सिपहिया, जतिया के हई जोलहिनिया नु रे की ॥३॥
जउँ तुहूँ साँवरि जाति जोलहिनिया, तबो साँवरि पनिया पिअावहु नु रे की ॥४॥
पनिया पिअवइत दँतवा झलकले, दइया तोहरे सिपहिया संगवाँ जाइब
नु रे की ॥५॥
झँझरे झरोखवा चढ़ि बिअही निरेखेले मोर प्रभु उढ़री ले आवे नु रे की ॥६॥
उढ़रि उढ़रि जनि करुरे बिअहिया गोबर कारन उढ़री अइलि नु रे की ॥७॥
बिअही जे रीन्हेलि धनवा के भतवा, ऊपर रहरिया के दलिया नु रे की ॥८॥
जेंवहि बइठेले पियवा परदेसिया, आजु के जेवनवा नाहीं नीमन नु रे की ॥९॥
उढ़री जे रीन्हेलि कोदई के भतवा, उपर जोन्हरिया के सगवा नु रे की ॥१०॥
जेवही बइठेले पिया परदेसिया, आजु के जेवनवा बड़ा नीमन रे की ॥११॥

ही जे डासेले लालि पलँगिया, उपरा से फुल छितरावेले रे की ॥१२॥
री जे चलेलें पिया परदेसिया, आजु के सेजरिया नाहीं नीमन रे की ॥१३॥
री जे डासेले कोदई के पुअरा, ऊपर रँगनिया के कंटवा नु रे की ॥१४॥
हीं जे चललें पिया परदेसिया, आजु के सेजरिया बड़ नीमन नु रे की ॥१५॥
रे सवति मिलि झोंटा झोटी कइली, दुअरा बइठल कुबजा
झँखेला रे की ॥१६॥
रा के मारिलें केकरा गरिआईं, केकरा के गुंजरी गढ़ाईं नु रे की ॥१७॥
ही के मारब बिअही गरिआइबि, उढ़री के गुजरी गढ़ाइब नु रे की ॥१८॥
ही के डँड़िया राम नव सूप माछो, उढ़री के डँड़िया चंवर
झुले रे की ॥१९॥
ही के डँडिया राम ओहि पार गइले, उढ़री के रहे मझधार नु रे की ॥२०॥
तोरा लागी ला बिअही तिरिअवा, तोहरे धरमवा पार
उतरबि रे की ॥२१॥
ी तिरिअवा राम बोलवो ना कइली, दूनो रे बेकति गोता
खइलें नु रे की ॥२२॥

बीच रास्ते में एक पतला कुंआ है। हा दैव, उससे एक सुन्दरी पानी
री है ॥१॥

घोड़े पर चढ़ा हुआ एक सिपाही उधर से निकला और उससे कहा,
द पानी मुझे पिला दो' ॥२॥

सुन्दरी ने कहा, 'अरे सिपाही! मैं किस तरह तुझे पानी पिलाऊँ।
व! मैं जात की जोलहिन हूँ' ॥३॥

सिपाही ने कहा, "हे साँवरि! जो तुम जात की जोलहिन हो तो भी
मुझे पानी पिलाओ।" ॥४॥

पानी पिलाते समय सिपाही के दाँत झलक गये। इसे देख कर जोल-
ने कहा, 'हा दैव! मैं इसी सिपाही के साथ जाऊँगी।' ॥५॥

कोठे के झरोखा पर बैठी हुई ब्याही स्त्री ने देखा और कहा, 'अरे हाय
! मेरा पति उढ़री (रखेली) लिये आ रहा है।' ॥६॥

पति ने कहा, 'अरे पत्नी ! उढ़री उढ़री (रखेली रखेली) न चिल्ला। यह रखेली गोबर पाथने के लिए आई है।' ॥७॥

बिअही धान के चावल का भात पकाती है और ऊपर से अरहर की दाल बनाती है ॥८॥

पति परदेशी खाने बैठता है और कहता है ! अरे दैव ! आज की रसोई अच्छी नहीं है ॥९॥

उढ़री कोदई का भात पकाती है और ऊपर से जोन्हरी का सत्तू चुराती है ॥१०॥

परदेशी पति भोजन करने बैठता है और कहता है, 'अरे, दैव ! आज की रसोई बहुत अच्छी है' ॥११॥

विवाहिता पत्नी लाल पलंग बिछाती है और उस पर फूल छितराती है ॥१२॥

परदेशी पति सोने जाता है और कहता है, 'अरे' आज की सेज अच्छी नहीं है' ॥१३॥

उढ़री कोदई का पयाल डसाती है और उस पर भटकटैया का कांटा रखती है ॥१४॥

परदेशी पति सोने जाता है और कहता है अरे ! आज की सेज बहुत अच्छी है ॥१५॥

दोनों सपत्नियों ने जुट कर आपस में खूब झोंटा झोंटी (बाल पकड़ कर लड़ाई) की और बाहर कूबड़ा पति बैठा हुआ झंख रहा था ॥१६॥

उसने कहा 'मैं किसको मारूँ और किसको गाली दूँ ? किसकी गूजरी (नथूनी) बनवा दूँ ?' ॥१७॥

उसने निश्चय किया कि ब्याही को ही मारेगा। उसी को गाली भी देगा। उढ़री (रखेली) के लिये नथनी बनवाएगा ॥१८॥

उसने ब्याही के लिए वह पालकी मगाई जो इतनी गंदी थी कि उस पर नव सूप मक्खियाँ भिनभिना रही थीं। और उढ़री की पालकी पर चँवर झूल रहे थे ॥१९॥

ब्याही की पालकी तो नदी पार हो गई। पर उढ़री की पालकी बीच

डूबने लगी ॥२०॥

पति ने कहा, हे ब्याही स्त्री मैं तेरा पाँव पड़ता हूँ। अब मैं तुम्हारे ही धर्म से पार उतरूँगा ॥२१॥

उत्तर में ब्याही स्त्री ने एक शब्द भी नहीं कहा। दोनों बेकत (स्त्री पुरुष) नदी में डूब गये ॥२२॥

(४८)

बाबा ! पांच फेड़ लवलीं अमुइया पचिस फेड़ महुइया लवली हो राम ॥
बाबा ! तबहूँ ना बगिया सोहावन एक रे सखुइया बिना हो राम ॥१॥
बाबा ! ससुरा में पांच भसुरवा पचीसो जाना देवर बाटें हो राम ॥
बाबा ! तबहूँ न ससुरा सोहावन एक रे पुरुख बिना हो राम ॥२॥
बाबा ! नइहर में पांच भइयवा पचीस जाना भतीजा बाड़े हो राम ॥
बाबा ! तबहूँ ना नइहर सोहावन एक रे मइअवा बिना हो राम ॥३॥
बाबा ! काहे के लवलीं घनि बगिया त काहे के फुलवरिया लवलीं हो राम ॥
बेटी ! छाँहें लागि लवलीं घनि बगिया धरम लागि फुलवरिया लवलीं हो राम ॥४॥
बाबा ! काहे के कइल मोर बिअहवा त काहे के गवन कइल हो राम ॥
बेटी ! सुख लागि कइलीं तोर बिअहवा त भुभुते के गवनवा कइलों हो राम ॥५॥
बाबा ! सिर मोरा जरेला हो सेनुर कजरवा बिना नयना हो राम ॥
बाबा ! गोद मोरा जरेला बलक बिना सेजिया पुरुख बिना हो राम ॥६॥
बाबा ! लागल बाड़ें हाजीपुर के हटिया करम मोर बदलि देहु हो राम ॥
बेटी ! सोनवा त रहितू तू बदलितों करम कइसे बदलबि हो राम ॥७॥

बाल विधवा कन्या अपने पिता से बातें कर रही है। देखिये बात का कितनी चतुराई से भरा है। पहले कहाँ से बात उठती है और अन्त कहाँ जाती है।

"हे पिता ! तुमने पाँच पेड़ तो आम के लगाये। पचीस पेड़ महुआ के। हे पिता ! तब भी तुम्हारा बाग शोभायमान नहीं है क्योंकि उसमें एक

पति ने कहा, हे धनी, मैं माता को हाट बाजार में बेच दूँगा। बहिन को विदेशी को दे दूँगा। भाई को लाल कमान से मारूँगा और तुम्हारे साथ राज सुख भोगूँगा। ॥५॥

स्त्री ने कहा, हे प्रियतम मा तो तुम्हारे हाथ की कंगन है। बहन तुम्हारे सिर की पगड़ी है। और भाई तो हे मेरे स्वामी! आप की दाहिनी भुजा हैं। मैं तुम्हारे पैरों की धूल हूँ ॥६॥

उत्तेजित पति को बहू ने नम्रता पूर्वक नीति की बात समझा कर शान्त किया।

पूरबी गीत

(१)

मोरा राम दूनू भैया से बनवा गइलनि ना ॥
दूनू भैया से बनवा गइलनि०॥
मोरही के भूखल होइहन, चलत चलत पग दूखत होइहन,
सूखल होइ हैं ना दूनों राम जी के ओठवा ॥१॥
मोरा दूनो भैया ०॥
अवध नगरिया से गइले, निपटे सपनवा भइले ना,
मोरा राम दूनो भइया से बनवां गइले ना ॥२॥
मोरा दूनो भैया ०॥
सुरुजा के किरिनि लगले लाल कुम्भि लाइल होइ हैं,
जागल होइहैं ना मोरा राम दूनो भैया जागल होइहैं ना ॥३॥
मोरा दूनो भैया ०॥
सूतल होइहैं छवना वे बिछवना दूनो भइया से थाकल होइहे ना
मोरा बनवा के तपसिया से बनवा गइले ना ॥४॥
कहत महेन्दर रोअति माता कोसिला रानी से अजहू अइलेन ना
मोरा कोखिया के बलकवा से बनवा गइले ना ॥५॥
राम दूनो भैया०॥

कौशल्या बिलख कर कह रही हैं।

हे राम! मेरे दोनों भाई वन गये? हा राम! मेरे दोनों भाई वन गये? वे सबेरे ही से अब तक भूखे होंगे। चलते चलते उनके पैर दुख गये होंगे। हा! राम के दोनों होठ भूख प्यास और थकान से सूखे होंगे ॥१॥

मेरे लाल सूर्य किरणों के लगने से हाय, कुम्हला गये होंगे। हा, अब वे उठे होंगे? दोनों भाई सोकर उठे होंगे? ॥२॥

वे दोनों बालक बिना बिछावन के कहीं रात में सो लिये होंगे। हा, वे दोनों भाई अब थक गये होंगे वे वन के दोनों तपसी अब थक गये होंगे? वे वन चले गये। ॥३॥

महेन्द्र कहते हैं कि कौशल्या रानी रोती हैं और कहती हैं, अरे! आज भी मेरी कोख के दोनों पुत्र जो एक दिन में लौटने को कहकर वन गये थे नहीं लौटे। ॥४॥

क्या मा कौशल्या का यह विलाप पाठक के हृदय को अधिक नहीं तो उतनी ही तीव्रता से नहीं मथ देता, जितनी तीव्रता से 'तुलसी' 'हरि औध' और 'सूर' की कौशल्या' और 'यशोदा' के विलाप को सुन कर वे आर्द्र हो जाते हैं? पाठक! विचारें और समझें। कवि भाव को छोड़ कर रस से हट कर क्षण मात्र भी दूसरी ओर नहीं गया। यही खूबी है। करुणा कौशल्या के कंठ में बैठकर स्वतः आ रही है। पुत्र की ममता रखने वाली हमारी सीधी सादी माताओं की विचार धारा ठीक इसी रूप में बहती है।

(२)

हे रघुनन्दन असुर निकन्दन कब लेबो मोर खबरिया राम।
रवना हरले हमे लिहले जाला नगरिया लंका राम।
रथवा चढ़ाई अकास उड़वले सूझत नाहीं डगरिया राम ॥१॥
जनकपुर नगर नइहर छूटले छूटले अवध नगरिया राम।
ससुरा के सुख कुछऊ ना जनलों हो गइलीं वन के अहेरिया राम ॥२॥
जनक राय अस बबवा हमरो पुरुष राम धनु धरिया राम।
हाय रघुनन्दन असुर निकन्दन कब लेब मोर खबरिया राम ॥३॥

हे असुर निकन्दन मेरी खबर कब लोगे । मुझे रावण हर करके लंका नगरी लिये जा रहा है । रथ पर चढ़ा कर आकाश में रथ उड़ा भागा । मुझे कोई भी पथ नहीं दिखाई दे रहा है ॥१॥

मेरा मयका जनक पुर छूट गया और छूट गई अयोध्या नगरी भी । मैंने ससुराल का सुख कुछ नहीं जाना । केवल वन का शिकार बन गई ॥२॥

मेरे जनक राजा ऐसे पिता हैं । और धनुष धारी राम ऐसे पुरुष हैं । पर हाय, असुरों को संहारने वाले राम ! तुम मेरी खबर कब लोगे ॥३॥

(३)

हमरा से छोटी छोटी भइली लरकोरिया से हाय रे सवलियों लाल, हमरी
बयसवा बीतल जाय ॥१॥ से हाय रे०॥
बाबा निरमोहिया गवनवा ना दीहले, से हाय रे सँवलियो लाल, बिरहा
सहल ना जाय ॥२॥ से हाय रे० ॥
बाट के बटोहिआ रामा, तूही मोरा भइया, से हाय रे सँवलियो लाल,
हरी से सनेसवा कहिओ जाय ॥३॥ से हाय रे०॥
आधी आधी रतिया, रामा बोलेला पपीहरा, से हाय रे सँवलियो लाल,
कोइलरि के बोलिया ना सोहाय ॥४॥ से हाय रे०॥
अइसने समैया राजा सुधि बिसरवले, से हाय रे सँवलियो लाल,
रहि रहि जिया घहराय ॥५॥ से हाय रे ०॥
कहैत महेन्दर कागा उचरहु अँगनवाँ से हाय रे सँवलियो लाल,
कबले कन्हइया मिलिहें आय ॥६॥ से हाय रे ॥

विरहिणी माय के बैठी बैठी बसन्त ऋतु में ससुराल की चिन्ता कर रही है ।

हम से छोटी अवस्था वाली लरकोरी (पुत्रवती) हो गईं । हाय रे सवँलिया लाल ! पर मेरी उमर ऐसी ही बीती चली जा रही है ॥१॥

मेरे निरमोही पिता ने (दूसरा पाठ है बाबा हाठ कइले = बाबा ने हठ किया) मेरा गवन नही किये । सो हाय रे सँवलिया लाल ! मुझसे यह विरह नहीं सहा जाता है ॥२॥

हे मार्ग से चलने वाले पथिक ! तुम्ही मेरे भाई हो। हाय रे सँवलिया लाल ! तुम मेरा सन्देशा मेरे हरी से जाकर कहना कि आधी आधी रात यहाँ पपीहा बोलता है, और हाय रे सँवलिया लाल। तुम ध्यान नहीं देते। उस पर कोयल की यह बोली और नहीं सही जाती है। हाय रे सँवलियालाल, तुम ध्यान क्यों नहीं देते? सो ऐसे वसंत ऋतु के समय में मेरे राजा ने मेरी सुधि बिसरा दी है। मेरा हृदय रह रह कर घहर उठता है—दुःख से गाज उठता है। हाय रे सँवलिया ! ध्यान क्यों नहीं देते ? ॥३,४,५॥

महेन्द्र कहते हैं कि विरहिणी काग को सम्बोधन करके कह रही है कि हे काग ! तुम मेरे आगन में उचरो (बोलो) तो। मेरे कन्हैया कब तक मुझसे आ मिलेंगे।

विरहिणी का कितना जीता जागता स्वाभाविक हृदय उद्गार है। जब पुरबी राग में पंचम स्वर में पानी बरसते समय यह गाया जाता है तो सुनने वाले का हृदय एक बार तो अवश्य हिल उठता है।

'महेन्द्र' मिश्र छपरा जिले के मिश्रवलिया ग्राम, पोष्ट जलालपुर के निवासी हैं। आपकी जाली नोट बनाने के अपराध में एक बार सजा हो गयी थी। आपके रचे अनेक गीत छपरा शाहाबाद, और गोरखपुर, गया, बलिया आदि जिलों में गाये जाते हैं। आप आज भी जीवित हैं। रचना करते हैं कि नहीं ज्ञात नहीं पर आप हैं बड़े रसिक। आपकी कई पुस्तकें भी प्रकाशित हुई थीं। प्रस्तुत गीत उनके प्रकाशित 'महेंद्र मङ्गल' (प्रथम भाग) से संकलित है। दिहात में रंडियां तो प्रायः उन्हीं की गीत कुछ दिनोतक गाती रही थीं।

(४)

कुछु दिना नैहरा खेलहूं ना पवलीं हो बाला जोरी से, सैया मागे ला
गवनवा हो बाला जोरी से ॥१॥
बभना निगोरा मोरा बाड़ा दुख देला हो बाला जोरी से, धरेला सगुनवा
हो बाला जोरी से ॥२॥
लाली लाली डोलिया रे सबुजी ओहरवा हो बाला जोरी से, सैयाँ ले
आवे अँगनवा हो बाला जोरी से ॥३॥

नाहीं मोरा लूर ढंग एको गहनवा हो बाला जोरी से, सैयाँ देखि हे
जोबनवा हो बाला जोरी से ॥४॥
मिलि लेहु मिलि लेहु संग के सहेलिया हो बाला जोरी से, फेरू होइहैं
नां मिलनवां हो बाला जोरी से ॥५॥
कहत 'महेन्द्र' कोई माने ना कहनवा हो बाला जोरी से, सैयाँ ले
चलले गवनवा हो बाला जोरी से ॥६॥

इस गीत का अर्थ ईश्वर पक्ष और शृङ्गार दोनों में लगाया जा सकता है ईश्वर पक्ष बहुत सुन्दर उतरता है ।

मैं कुछ दिन नैहर में खेलने भी न पाई कि सैयाँ बरजोरी से मेरा गवना करने को कहने लगे । हाय बरजोरी गवना मागने लगे ॥१॥

निगोड़ा ब्राह्मण मुझे बड़ा दुख देता है । वह बल पूर्वक मेरे गवन का सगुन रखता है । हाय मेरे गवन की साइत बरजोरी से धरता है ॥२॥

लाल लाल डोली है । उस पर सब्ज रंग का ओहार लगा है । बरजोरी से सैयाँ मेरे आँगन में लाकर रखता है । हाय बलपूर्व वह डोली मेरे आँगन में रखता है ॥३॥

मेरे पास न कोई लूर ढंग है किसी का न ज्ञान है न रहन सहन की तमीज ही है और न कोई आभूषण ही मेरे पास हैं । हाय बरजोरी से (बल पूर्वक) सैंया मेरे जोबनों को देखेगा । हाय बलपूर्वक सैयां मेरे जोबनो को निरेखेगा ॥४॥

हे संग की सहेली ! तुम सब मुझसे मिल लो तुम सब किसी तरह मुझसे मिल लो । अब मेरा फिर यहाँ आना नहीं होगा । हाय बलपूर्वक मैं जा रही हूँ मैं फिर यहाँ नहीं आऊँगी । ॥५॥

'महेन्द्र' कहते हैं कि विरहिणी यह कहती चली ही गई कि मेरा कहना कोई नहीं मानता । बलपूर्वक सैयां मेरा गवना करके ले चले । कोई मेरा कहा नहीं सुनता नहीं सुनता । सैयां बरजोरी से मुझे ले ही चले । ॥६॥

कितना सरस और ज्ञानमय यह गीत है । भक्त और रसिया दोनों इसको एक समान गा गा कर और ईश्वर तथा प्रेयसी के प्रति अपने २ स्वभावा-

नुसार अर्थ लगा लगा कर अपने अपने उमंगों में डूबने उतराने लगते हैं। महेंद्र मिश्र जी की अधिकांश रचनायें ऐसी ही सरस हैं। पर खेद है कि किसी गुणग्राही ने उनको पुस्तकाकार रूप में आज तक एक जगह एकत्र नहीं किया। बिहार की कितनी निधियाँ इसी तरह रोशनी में आये बिना ही नष्ट हो गयीं। यही सबसे बड़े खेद की बात है। हिंदी लेखकों के अग्रज इस ओर ध्यान दें, प्रकाशक समझें कि जिस मातृ भाषा की दी हुई रोटी उन्हें मिलती है उसके सपूतों को इस तरह अजाने मर जाने का सबसे बड़ा दायित्व उन्हीं पर है। माधुरी ने 'पढ़ीस' अंक निकाल कर 'पढ़ीस' को हिंदी संसार के सामने ला दिया है। अवधी, बुंदेली, भोजपुरी, मैथिली, नागरी आदि के सैकड़ों 'पढ़ीस' बे जाने कब और कहाँ मर मिटे।

(५)

आरे मोरा दूनो रे बलकवा आजु बनवा गइले ना। आजु बनवा० ॥
कोसिला सुमितरा रानी झँखेली अगनवा कि सुनवा भइले ना मोरा कंचन के
अगनवा कि सुनवा भइले ना ॥१॥ आजु बनवा०
जनक कुमारी सीता अति सुकुमारी हो की सँगवा गइली ना तजि के अवध
नगरिया कि संगवा गइली ना ॥२॥
कठिन कठोर केकई लेलू वरदनवा की दुलमवा भइले ना हमरा राजा
जिअनवा कि दुलमवा भइले ना ॥३॥ आजु बनवा० ॥

अरे ! मेरे दोनों बालक आज बन गये। कौशल्या और सुमित्रा रानी कह रही हैं और कह रही हैं कि हमारा सोने का आगन आज सूना हो गया ॥१॥

जनक कन्या सीता जी अति सुकुमारी है, वह भी उनके सङ्ग अवध नगरी त्याग कर चली गयीं। हाय आज मेरे दोनों बालक बन चले गये ॥२॥

अरी कैकेयी ! तू कितनी कठोर हो। तूने ऐसा वरदान लिया कि हमारे पति का जीना असम्भव हो गया। हाय ! आज हमारे दोनों बालक बन चले गये ॥३॥

(६)

अरे मोरा वंसीवाला कान्हा मधुबनवां गइले ना।
मोरा साँवली सुरतिया भुलाई रे दीहले ना ॥१॥
ओही मधुबनवा में कूबरी सवतिया लोभाई रे गइले ना।
ओही कूबरी के सँगवा लोभाई रे गइले ना ॥२॥
ओही मधुबनवा से उधो जी लवटले, से लेइरे अइले ना मोरा जोगिया के पतिया ॥३॥ मोरा वंसी वाला० ॥

अरे मेरे वंशी वाले कान्ह मधुबन गये। वे हमारी साँवली सूरति को भूल गये ॥१॥

उसी मधुबन में कूबरी सवति रहती है। वे कान्ह उसी कूबरी के पर लुभा गये। अरे वे उसी कूबरी के पर लुभा गये ॥२॥

उसी मधुबन से ऊधो जी आये हैं। वही मेरे योगी का पत्र ले आये हैं ॥३॥

मेरे वंशी वाले कान्ह मधुबन गये।

कजरी

(१)

आहो बावाँ नयन मोर फरके आजु घर बालम अइहें ना ॥ आहो बावाँ०॥
सोने के थरियवा में जेवना परोसलों जेवना जेइहें ना ॥
झाझर गेड़ुवा गंगाजल पानी पनिया पीहें ना ॥१॥ आहो बावाँ०॥
पाँच पाँच पनवा के बिरवा लगवलों बिरवा चभिहें ना ॥
फूल नेवारी के सेज डसावलों सेजिया सोइहें ना ॥२॥

अरे मेरी बाईं आँख आज फड़क रही है। आज मेरे बालम घर आवेंगे। मैंने सोने की थाल में जेवनार परोसा है वे जेवनार जेवेंगे। झँझरीदार गेड़ुये में गंगाजल रखा है। उसे वे पीएंगे ॥१॥

पाँच पाँच पत्ते के बीरे लगाई हूँ! उसे वे खायँगे। नेवारी पुष्प की

सेज बिछाई हूँ उस पर प्रियतम सोवेंगे ॥२॥ अरे आज मेरी बाईं आँख फड़क रही है प्रियतम आवेंगे।

(२)

सखी हो स्याम नहीं घर आये पानी बरसन लागे ना ॥
बादल गरजे बिजुली चमके जियरा धड़के ना ॥१॥ सखी हो० ॥
सोने के थरिया में जेवना परोसलों जेवना भींजे ना।
झर झर गेड़ुआ गंगा जल पानी पनिया भींजे ना ॥२॥ सखी हो०॥
लौंगा में डोभि डोभि बिरवा लगवलों बिरवा भीजे ना।
फूल नेवारी के सेज डसवलों सेजिया तवायें ना ॥३॥ सखी हो०॥

अर्थ सरल है।

(३)

राजा हो बड़ा कड़ा जल बरीसे नोकरी जइब कइसे ना ॥
गोड़ में जूता हाथ में छाता मुखे रुमलिया ना।
जानी हो धीरे धीरे चलि जइबों साहेब तलब कटिहें ना ॥१॥
सोने के थारी में जेवना परोसलों जेवना जेइल ना।
झाँझर गेड़ुआ गंगा जल पानी पनिया पील ना ॥२॥ राजा हो०॥
लौंगा में डोभि डोभि बिरवा लगवलों बिरवा चाभिल ना।
फूल नेवारी के सेज डसवलों सेजिया सोइल ना ॥३॥ राजा हो०॥

हे राजा ! बहुत तेज पानी बरस रहा है। तुम नौकरी पर इसमें कैसे जाओगे ? पूछ रही है आगत पतिका अपने परम प्यारे पति से।

गरीब नौकर पति उदास होकर अपनी मजबूरी दिखाते हुये कहता है, प्यारी ! गोड़ में जूता पहन लूँगा, हाथ में छाता ले लूँगा और मुख पर माल रखकर धीरे धीरे किसी तरह नौकरी पर चला जाऊँगा। न जाने से हब तलब काट लेगा। (जान पड़ता है पति किसी अंग्रेज का खानसामा या र्क था) ॥१॥

उदास होकर आगत पतिका ने कहा, "अच्छा प्रियतम ! तुम जाओ; सोने की थाली में जो जेवनार परोस चुकी हूँ उसे खालो। झाँझर गेड़ुआ